क्यों ये बड़े-बड़े दफ्तरों में

ऊँची-ऊँची इमारतों में

क्यों ये सत्ता की होड़ में

क्यों ये एक पाई की जोड़-तोड़ में

क्यों ये थोथे सिद्धान्तों के नीचे दबकर मर गये

यदि बच रहे

तो फूली लाश की तरह उबर गये ?

9. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

क्षरण होता है

प्रतिक्षण कुछ

कि जीवन-प्रस्फुरण हो।

यही है सौंदर्य आभा,

ओज भी है, तेज भी है।

क्षरण रोको, मरण रोको,

और जीवन-प्रस्फुरण स्वमेव रुकता।

प्रकृति-गत अमरत्व कितना

रुग्ण है, दयनीय है, करुणाजनक है।

HD–05

December – Examination 2020

B.A. (Part III) Examination

HINDI LITERATURE

आधुनिक काव्य

Paper : HD-05

*Time : **2** Hours*] [*Maximum Marks : **70***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **7×2=14**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक वाक्य, एक शब्द या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1. (i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने आधुनिक काल की शुरुआत कबसे मानी है ?

(ii) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की रचना 'सरोज स्मृति' किस संग्रह में संकलित है ?

(iii) किन्हीं **दो** खण्डकाव्यों के नाम रचनाकार सहित लिखिए।

(iv) प्रबन्धकाव्य के भेदों को लिखिए।

(v) 'कुआनों नदी' कविता में किसकी अभिव्यक्ति है ?

(vi) सुमित्रानंदन पंत की **दो** लम्बी कविताओं के नाम लिखिए।

(vii) 'प्रवाद पर्व' के रचनाकाल को बताइये।

खण्ड—ब **4×14=56**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 14 अंकों का है।

2. खण्डकाव्यों के स्वरूप निर्धारक सम्बन्धी तत्त्वों का विवेचन कीजिए।

3. आधुनिक हिन्दी कविता के उद्‌भव व विकास पर टिप्पणी लिखिए।

4. लम्बी कविताओं के विकास में 'दो चट्टानें' कविता का महत्त्व रेखांकित कीजिए।

5. 'प्रवाद पर्व' में निहित मिथकीय चेतना का आधुनिक संदर्भ में मूल्यांकन कीजिए।

6. 'सरोज-स्मृति' कविता के अभिव्यंजनात्मक पक्ष पर टिप्पणी लिखिए।

7. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

औ मर गया .....
वह सघन झाड़ी के कंटीले
तम बिवर में
मरे पक्षी-सा
विदा ही हो गया
वह ज्योति अनजानी सदा को सो गयी
यह क्यों हुआ! क्यों यह हुआ!
मैं ब्रह्मराक्षस का सजल-उर शिष्य
होना चाहता हूँ
जिससे कि उसका वह अधूरा कार्य,
उसकी वेदना का स्रोत
संगत, पूर्ण निष्कर्षों तलक पहुँचा सकूँ।

8. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

क्यों हम आदमी को
आदमी की तरह नहीं देख पाते ?
क्यों ये सब फाइलों में मरे पड़े हैं ?
क्यों ये स्कूलों, और कॉलेजों में,